भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या 353
बुधवार, 12 अगस्त, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

आपदाओं संबंधी पूर्व चेतावनी प्रणालियों को सुदृढ़ करना

†*353. श्री योगेन्द्र चांदोलिया:
श्री बिभु प्रसाद तराई:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने चक्रवातों, बाढ़, लू की स्थिति, बिजली गिरने और विषम मौसम की अन्य घटनाओं के संबंध में आपदाओं संबंधी पूर्व चेतावनी प्रणाली (एमएचईडब्ल्यूएस) के कार्यान्वयन की समीक्षा की है और यदि हां, तो उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले और आंध्र प्रदेश के अमलापुरम लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित तत्संबंधी राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है और उक्त प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं;

(ख) क्या सरकार ने राज्यों, आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों, किसानों और कमजोर समुदायों के लिए प्रभाव-आधारित पूर्वानुमान में सुधार लाने और पूर्व चेतावनियों के समय पर प्रचार-प्रसार के लिए उपाय किए हैं और यदि हां, तो उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले और आंध्र प्रदेश के अमलापुरम लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित तत्संबंधी राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने मोबाइल एप्लीकेशन, एसएमएस अलर्ट, डिजिटल प्लेटफार्मों और समुदाय आधारित चेतावनी प्रणालियों के माध्यम से अंतिम छोर तक मौसम संबंधी परामर्श के प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ करने के लिए पहल की हैं और यदि हां, तो उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले और आंध्र प्रदेश के अमलापुरम लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित तत्संबंधी राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार ने विशेषकर आपदा-प्रवण क्षेत्रों में एमएचईडब्ल्यूएस के कवरेज, सटीकता और प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए कोई रूपरेखा तैयार की है और जान-माल के नुकसान को कम करने के संबंध में इसके प्रभाव का आकलन किया है और यदि हां, तो उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले और आंध्र प्रदेश के अमलापुरम लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित तत्संबंधी राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार का विचार आपदा तैयारी और जलवायु प्रत्यास्थता में सुधार लाने के लिए पूर्वानुमान संबंधी उन्नत प्रौद्योगिकियों, एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान के माध्यम से और राज्यों के साथ समन्वय बढ़ाकर एमएचईडब्ल्यूएस को और अधिक सुदृढ़ करने का है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) विगत तीन वर्षों के दौरान केंद्र सरकार द्वारा एमएचईडब्ल्यूएस को सुदृढ़ करने के लिए विशेषकर उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित अन्य राज्य सरकारों को प्रदान की गई वित्तीय और तकनीकी सहायता का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) से (च): विवरण सभा पटल पर रखा गया है।

" आपदाओं संबंधी पूर्व चेतावनी प्रणालियों को सुदृढ़ करना" के संबंध में दिनांक 12 अगस्त, 2026 को उत्तर दिए जाने हेतु तारांकित प्रश्न संख्या *353 के (क) से (च) के उत्तर में लोकसभा के पटल पर रखा जाने वाला विवरण।

(क) जी हाँ। भारत सरकार ने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के संस्थानों और भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के माध्यम से देश के अलग-अलग राज्यों - में चक्रवात, बाढ़, लू, शीतलहर, गर्जयुक्त -तूफ़ान, आकाशीय बिजली गिरने और मौसम की अन्य चरम घटनाओं जैसे विभिन्न जल-मौसम संबंधी खतरों से निपटने के लिए 'बहु-जोखिम पूर्व चेतावनी प्रणाली' (एमएचईडब्ल्यूएस) को लागू करने और उसकी प्रभावशीलता की लगातार निगरानी और गहन समीक्षा की है जिनमें उत्तर प्रदेश का बुलंदशहर ज़िला और आंध्र प्रदेश का अमलापुरम लोकसभा क्षेत्र भी शामिल है। वैश्विक मानकों के अनुरूप (एमएचईडब्ल्यूएस) सहित प्रचालन मौसम विज्ञान सेवाओं के आधुनिकीकरण की दिशा में एक पहल के तौर पर, आईएमडी एक 'सीमलेस फोरकास्ट' (निर्बाध पूर्वानुमान) रणनीति अपना रहा है, जिसमें सभी समयगत और स्थान संबंधी पैमानों को शामिल किया गया है। हाल के वर्षों में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय मौसम संबंधी पूर्व-चेतावनी प्रणाली के आधुनिकीकरण में अत्यधिक प्रगति हुई है। इसके अंतर्गत आईएमडी ने 'कोई भी मौसम घटना बिना पता लगाए या बिना पूर्वानुमान के न रहे' के उद्देश्य से जीआईएस-सक्षम 'डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' (निर्णय सहायता प्रणाली) के अत्याधुनिक सेट के साथ 'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वार्निंग सिस्टम' को लागू किया है। निर्बाध पूर्वानुमान की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, आईएमडी नियमित रूप से क्षेत्रीय स्तर पर बारिश के साथ-साथ अधिकतम और न्यूनतम तापमान, लू और शीतलहर के लिए मौसमी पूर्वानुमान जारी करता है; इसके बाद ज़ोनल/उप-विभागीय स्तर पर मासिक पूर्वानुमान और दो सप्ताह के लिए साप्ताहिक विस्तारित-अवधि का पूर्वानुमान जारी किया जाता है; फिर ज़िला/उप-ज़िला स्तर पर एक सप्ताह के लिए दैनिक अल्प-से-मध्यम अवधि का मौसम पूर्वानुमान और अति-स्थानीय स्तर पर 'नाउकास्ट' (तत्काल मौसम पूर्वानुमान) जारी किए जाते हैं। इससे विभिन्न हितधारकों, आपदा प्रबंधकों और प्रशासनिक अधिकारियों को तैयारी करने, प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करने और बहु-जोखिम को कम करने के लिए कार्य-योजना बनाने में मदद मिलती है।

'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' (एमएचईडब्ल्यू -डीएसएस) एक अत्याधुनिक एप्लीकेशन है जिसे आईएमडी ने 'मिशन मौसम' पहल के अंतर्गत स्वयं विकसित किया है। यह एक वेब-जीआईएस आधारित डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है जिसे मौसम का पूर्वानुमान लगाने, मौसम से जुड़े बड़े डेटा को संभालने और समय पर मौसम की चेतावनी देने के लिए बनाया गया है। रियल-टाइम ऑब्ज़र्वेशन, एडवांस्ड मॉडलिंग, जीआईएस -आधारित एनालिसिस और व्यवस्थित जानकारी प्रसार को एक ही डिजिटल फ्रेमवर्क में जोड़कर, यह सिस्टम मौसम और जलवायु की जानकारी को समय पर किए जाने वाले बचाव कार्यों में बदल देता है। इस सिस्टम के अंतर्गत, अलग-अलग सेक्टर के लिए कई जियोस्पेशियल एप्लीकेशन विकसित किए गए हैं। ऐसा ही एक एप्लीकेशन है 'मौसमग्राम', जो बहुत ही स्थानीय स्तर (हाइपर-लोकल) पर मौसम का पूर्वानुमान लोगों तक पहुँचाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि मौसम की ज़रूरी जानकारी नागरिकों और मौसम पर निर्भर सेक्टरों तक सही ढंग से पहुँचे। 'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' (एमएचईडब्ल्यू -डीएसएस) ने पर्यावरण, ऊर्जा, स्वास्थ्य, कृषि, आजीविका और गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में तैयारी को मज़बूत किया है। इसने लगातार और प्रभावकारी चेतावनियों के माध्यम से जान-माल के नुकसान को कम किया है, आर्थिक नुकसान को सीमित किया है, सर्विस डिलीवरी में सुधार किया है और जनता का विश्वास बढ़ाया है। 'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' मौसम का पूर्वानुमान करने और आपदा के जोखिम को कम करने के भारत के दृष्टिकोण में एक बड़ा बदलाव लाता है। यह सिस्टम दिखाता है कि कैसे टेक्नोलॉजी पर आधारित पूर्व चेतावनी प्रणाली राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को बड़ा लाभ पहुँचाती है और भारत को मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग सिस्टम के क्षेत्र में एक ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करती है।

राष्ट्रीय स्तर पर, 'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' ने आपदा की तैयारी और उससे निपटने के तरीकों को काफी बेहतर बनाया है। वर्तमान में, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (एनडीआरएफ) और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) सहित 200 से ज़्यादा संगठन इस प्रणाली से लाभ प्राप्त कर रहे हैं। यह सिस्टम समय पर पूर्वानुमान और प्रभाव के आधार पर चेतावनी देता है। साथ ही, यह शहरी योजना बनाने वाली एजेंसियों, बिजली कंपनियों, स्वास्थ्य सेवाओं और एविएशन जैसे सेक्टर से जुड़े लोगों को मौसम से जुड़ी ऐसी जानकारी देता है, जिससे वे बेहतर निर्णय ले सकें।

(ख) जी हाँ। सरकार ने 'प्रभाव आधारित पूर्वानुमान' (आईबीएफ) में काफी सुधार किया है। वर्ष 2019 से ज़िला स्तर पर सामान्य मौसम के पूर्वानुमान के बजाय, ऐसे पूर्वानुमान और जोखिम-आधारित चेतावनियाँ शुरू की गई हैं जो जीवन, संपत्ति, खेती, बुनियादी ढाँचे, परिवहन और ज़रूरी सेवाओं पर संभावित प्रभाव के साथ-साथ आवश्यक कार्रवाई के सुझाव भी देती हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, आईएमडी के माध्यम से, गंभीर मौसम के पूर्वानुमान और चेतावनियाँ केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों (जैसे गृह मंत्रालय, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, बिजली और स्वास्थ्य मंत्रालय आदि), राज्य सरकारों और केंद्र व राज्य स्तर की आपदा प्रबंधन एजेंसियों को ईमेल, एपीआई और डिजिटल चैनलों के माध्यम से भेजता है। राष्ट्रीय स्तर पर, 'मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम' ने आपदा की तैयारी और उससे निपटने के तरीकों को काफी बेहतर बनाया है। अभी, एनडीएमए, एनडीआरएफ और एसडीएमए सहित 200 से ज़्यादा संगठन इस सिस्टम का लाभ उठा रहे हैं। यह सिस्टम समय पर पूर्वानुमान और प्रभाव-आधारित चेतावनियाँ देता है। साथ ही, यह शहरी योजना बनाने वाली एजेंसियों, बिजली कंपनियों, स्वास्थ्य सेवाओं और विमानन जैसे क्षेत्रों से जुड़े लोगों को बेहतर फ़ैसले लेने के लिए मौसम से जुड़ी काम की जानकारी भी देता है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय नियमित रूप से पीएमओ, एमएचए और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की बैठकों में भाग लेता है और ज़रूरी जानकारी देता है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की ' फ़सल-मौसम निगरानी ' के अंतर्गत , आईएमडी हर सप्ताह पिछली बारिश और अगले दो हफ़्तों की बारिश का पूर्वानुमान देता है। आईएमडी देश भर के सभी संबंधित लोगों को ज़िला और ब्लॉक स्तर पर हुई बारिश की जानकारी भी देता है। लू, सूखे, भारी बारिश, चक्रवात और मौसम की अन्य चरम स्थितियों के दौरान, आईएमडी प्रभाव -आधारित पूर्वानुमान (IBF) और फ़सल-विशेष परामर्शिकाएँ जारी करता है ताकि किसान समय पर निर्णय ले सकें और फ़सल की हानि को कम किया जा सके।

(ग) जी हाँ। सरकार ने शुरुआती चेतावनियों को आखिरी छोर तक पहुँचाने के लिए कई कदम उठाए हैं। आईएमडी, 55 होस्ट संस्थानों के साथ मिलकर 'ग्रामीण कृषि मौसम सेवा' (जीकेएमएस) संचालित करता है। इन संस्थानों में इंडियन काउंसिल ऑफ़ एग्रीकल्चरल रिसर्च के संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय (एसएयू), इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी और अन्य संस्थान शामिल हैं। इस योजना के अंतर्गत, 127 कृषि-जलवायु क्षेत्रों को कवर करने वाली 130 एग्रो-मेटियोरोलॉजिकल फील्ड यूनिट्स (एएमएफयू) जिले के हिसाब से कृषि-मौसम संबंधी परामर्शिकाएँ सप्ताह में दो बार (मंगलवार और शुक्रवार) जारी करती हैं। साथ ही, आईएमडी के मध्यम-अवधि के मौसम पूर्वानुमान के आधार पर प्रतिदिन मौसम की चेतावनी जारी करके किसानों तक पहुँचाती हैं। जीकेएमएस योजना के अंतर्गत, देश भर के सभी कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिलों (उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित) को शामिल किया गया है, ताकि किसानों को सीधे रियल-टाइम मौसम पूर्वानुमान, कृषि-मौसम संबंधी परामर्शिकाएँ और पूर्व चेतावनियाँ दी जा सकें। इसके अलावा, आईएमडी अपने संबंधित राज्यों (उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित) के लिए क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्रों और मौसम विज्ञान केंद्रों के माध्यम से जिले के स्तर पर प्रभाव-आधारित मौसम पूर्वानुमान और जोखिम-आधारित चेतावनी दिन में दो बार जारी करता है, जो 7 दिनों तक मान्य होती हैं। चक्रवात जैसे गंभीर मौसम के मामलों में ये चेतावनियाँ

ज़्यादा बार जारी की जाती हैं। साथ ही, ब्लॉक-स्तर पर 5 दिनों तक मान्य पूर्वानुमान भी प्रतिदिन जारी किए जाते हैं। आपदा की तैयारी और जलवायु के प्रति अनुकूलन क्षमता बेहतर बनाने के लिए देश भर के किसानों, मछुआरों, तटीय समुदायों आदि तक रियल-टाइम मौसम संबंधी परामर्श पहुँचाने के लिए आईएमडी ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

- मौसम, मेघदूत, दामिनी और उमंग मोबाइल ऐप्स के माध्यम से पब्लिक अलर्ट और जानकारी।
- डिजिटल माध्यमों से जानकारी फैलाना, रजिस्टर्ड यूज़र्स को एसएमएस-आधारित नाउकास्टिंग/फोरकास्टिंग अलर्ट भेजना।
- कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (सीएपी), सचेत ऐप।
- सोशल मीडिया और मास मीडिया प्लेटफॉर्म।
- ज़िला कलेक्टर — सीधे ईमेल और व्हाट्स ऐप ग्रुप नोटिफिकेशन।
- कम्युनिटी रेडियो, पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम और दूसरे लोकल कम्युनिकेशन नेटवर्क के माध्यम से प्रसारण।
- राज्य सरकार के मोबाइल ऐप के माध्यम से जानकारी प्रसारित करना।
- मौसम का पूर्वानुमान/चेतावनी और परामर्शिकाएँ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दूरदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो, किसान पोर्टल/एम किसान के माध्यम से एसएमएस, मेघदूत (अंग्रेज़ी और 12 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध), मौसम, यूट्यूब और सोशल मीडिया के माध्यम से दी जाती है।
- पंचायती राज मंत्रालय के सहयोग से, आईएमडी ने 'पंचायत मौसम सेवा पोर्टल' विकसित किया है, जो ई- ग्रामस्वराज, मेरी पंचायत ऐप, ई- मानचित्र और मौसम ग्राम के माध्यम से पंचायत-स्तर पर मौसम का पूर्वानुमान उपलब्ध कराता है।
- पंचायत सदस्यों, वार्ड सदस्यों और पंचायत सचिवों के मोबाइल नंबरों को 'पंचायत मौसम सेवा पोर्टल' से जोड़ा गया है, जिससे ग्राम पंचायत स्तर पर आगे जानकारी प्रसारित करने के लिए व्हाट्स ऐप के माध्यम से मौसम का पूर्वानुमान और कृषि-मौसम संबंधी परामर्शिकाएँ समय पर दी जा सके।
- आईएमडी मौसम के पूर्वानुमान और कृषि-मौसम संबंधी परामर्शिकाएँ को अंतिम छोर तक पहुँचाने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय के 'कृषि सखी' और 'पशु सखी' नेटवर्क का भी इस्तेमाल करता है।
- मौसम के पूर्वानुमान और कृषि-मौसम संबंधी परामर्शिकाएँ को तेज़ी से प्रसारित करने के लिए 'वाट्सऐप' जैसे सोशल मीडिया का भी उपयोग किया जाता है। कृषि-मौसम संबंधी सेवाओं की जानकारी देने के लिए अलग-अलग एएमएफयू द्वारा किसानों के वाट्सऐप ग्रुप बनाए गए हैं।
- 'मिशन मौसम' के अंतर्गत, आईएमडी ने जगह, फ़सल और फ़सल की अवस्था के अनुसार परामर्शिकाएँ देने के लिए कल्प (Krishi Advisory based on Location-specific Weather Prediction) और मौसम एनालिटिक्स, परामर्शिकाएँ तैयार करने और जलवायु-अनुकूल कृषि योजना को मज़बूत करने के लिए मौसम संकल्प (Systematic Agrometeorological Analytics, Knowledge and Advisory enabLing Platform) विकसित किया गया है।

(घ)-(ङ) जी हाँ। सरकार ने मल्टी-हैज़र्ड अर्ली वॉर्निंग डिसीजन सपोर्ट सिस्टम की कवरेज, सटीकता और प्रभावशीलता को लगातार बढ़ाने के लिए एक रोडमैप विकसित किया है। मिशन मौसम की परिकल्पना प्रेक्षण नेटवर्क को बढ़ाने, मौसम का पूर्वानुमान, पूर्व चेतावनी सेवाओं और आपदा तैयारियों में सुधार के लिए एक परिवर्तनकारी, परिणाम-उन्मुख राष्ट्रीय पहल के रूप में की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित देश भर में मौसम संबंधी मापदंडों में दीर्घकालिक परिवर्तनों की निगरानी करता है। मौसम और जलवायु सेवाओं के एक भाग के रूप में, आईएमडी ने सबसे खतरनाक मौसम संबंधी घटनाओं, जैसे

चक्रवात, अत्यधिक वर्षा, लू, शीत लहर , आकाशीय बिजली इत्यादि के लिए भारत के जलवायु खतरों और भेद्यता एटलस का एक वेब संस्करण तैयार किया है। इसमें चक्रवात, बहुत ज्यादा बारिश, लू (हीटवेव), शीतलहर (कोल्डवेव) और आकाशीय बिजली गिरने जैसी खतरनाक मौसमी घटनाओं को शामिल किया गया है, जो जीवन की हानि, चोट या अन्य स्वास्थ्य प्रभाव, संपत्ति की क्षति, आजीविका और सेवाओं की हानि, सामाजिक और आर्थिक व्यवधान या पर्यावरणीय क्षति का कारण बनता है। वेब एटलस को भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) टूल का उपयोग करके दर्शाया गया है और यह आईएमडी, पुणे की वेबसाइट (https://www.imdpune.gov.in/hazardatlas/index.html) पर उपलब्ध है। एटलस सभी कैलेंडर महीनों और वार्षिक पैमाने पर जोखिमों की घटनाओं और संवेदनशीलता के जिला मानचित्र प्रदान करता है।

मंत्रालय, मौसम और समुद्र की स्थिति के पूर्वानुमान में बेहतर सटीकता हासिल करने और समय पर चेतावनी देने वाले सिस्टम को मजबूत करने के लिए लगातार प्रेक्षण नेटवर्क को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा है। इस नेटवर्क में सतह और ऊपरी हवा के सिस्टम, सैटेलाइट मॉनिटरिंग, हाई-रिज़ॉल्यूशन डायनामिकल मॉडल, डेटा एसिमिलेशन तकनीक और रिसर्च और डेवलपमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और इसके संस्थान, मौसम और जलवायु से जुड़ी आपदाओं के लिए तैयारी को बेहतर बनाने के उद्देश्य से राज्य और संघ राज्यों की सरकारों और समुदाय-आधारित पहलों के लिए नियमित रूप से जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं। मंत्रालय, मौसम के प्रतिकूल होने से पहले आपदा की तैयारी, सुरक्षा प्रक्रियाओं और एक्शन प्लान पर चर्चा करने के लिए नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी, स्थानीय प्रबंधन प्राधिकरणों और अन्य संबंधित लोगों के साथ नियमित रूप से वार्तालाप करता है। इस वार्तालाप में हर साल ट्रॉपिकल साइक्लोन की अवधि (अप्रैल-जून और अक्टूबर-नवंबर), गर्मी का मौसम और अत्यधिक तापमान की स्थिति (अप्रैल-जून), और मॉनसून में भारी बारिश की तैयारी (जून-दिसंबर) शामिल होती है। उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित पूरे देश के लिए मौसम का पूर्वानुमान आईएमडी अपने ऑपरेशनल फोरकास्टिंग सेंटरों के ज़रिए जारी करता है। 'मौसमग्राम' प्लेटफॉर्म (mausamgram.imd.gov.in) किसानों के लिए बनाया गया आईएमडी का एक खास मौसम इंटरफ़ेस है, जो पंचायत स्तर पर काम करता है। यह आने वाले दस दिनों के लिए हर घंटे, हर 3 घंटे और हर 6 घंटे का पूर्वानुमान देता है। उपयोगकर्ता ग्राम पंचायत स्तर के हिसाब से तापमान, हवा की गति, बादलों की स्थिति, बारिश और नमी का रियल-टाइम डेटा देख सकते हैं।

(च) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय पूरे देश में केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं को एक समान रूप से लागू करता है; इसलिए, निधि का आवंटन राज्य या संघ राज्य के आधार पर नहीं किया जाता है।

*****